

# ਜਾਧੂ ਦਿਸ਼ਾ

ਨਵੀਂ ਸੋਚ ਨਵੀਂ ਰਪਤਾਰ

## नई सोच नई रपतार

१० वर्ष : १९२५

■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19

जयपुर, सोमवार 4 अगस्त, 2025

■ RNI.No.RAJHIN/2016/7016

■ मूल्य : 1.50 रुपए ■ पृष्ठ : 8+ \$

# दिल्ली में भजनलाल की अमित शाह और बीएल संतोष से मुलाकात

# अमित शाह से मुलाकात के बाद प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियाँ होने के आसार

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा केंद्र सरकार के मंत्रियों से प्रदेश के सर्वांगीण सर्वांगीण विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा आर्थिक सहायता लेने की कर रहे हैं कोशिश

जयपुर टाइम्स



चेहरे पर नई रौनक छा गई थी क्योंकि मार्दी ने उन्हें उनके अच्छे कामों के लिए बधाई दी थी इसके बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दुगने जोश और उत्साह के साथ केंद्र सरकार के बड़े-बड़े विभाग संभाल रहे मित्रियों से एक-एक करके मुलाकात की और राजस्थान के सर्वांगीण विकास के लिए उनसे मदद भी मांगी थी कुल भिलाकर भजन लाल शर्मा का दिल्ली दौरा प्रदेश की जनता के लिए काफी फायदेमंद साकित होने वाला है और अभी हाल ही में भजनलाल शर्मा ने दिल्ली में गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की करीब 1 घंटे तक दोनों नेताओं के बीच मुलाकात हुई इस मुलाकात में भजनलाल शर्मा ने पदेश सरकार के कामकाज के बारे में विस्तार से जानकारी दी और केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न जन कल्पाणकारी योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट भी शाह के सम्मुख प्रस्तुत की और उन्हें यह बताया कि प्रदेश में नए कानून तागू होने के प्रभाव के बारे में भी जानकारी दी तथा राजस्थान सरकार की ओर से विभाग बार आगे और क्या-क्या कार्य किए जाएंगे इसके बारे में भी शाह को जानकारी दी गई। मुख्यमंत्री शर्मा ने अमित शाह को बजट की घोषणाओं के कियान्वयन के बारे में भी बताया और भाजपा के संकल्प पत्र के बादों की कियान्वयन के बारे में भी तथ्यात्मक तरीके से जानकारी दी। इस बीच जानकारी यह भी सिली ही है कि पदेश में

अचानक नरेंद्र मोदी राष्ट्रपति द्वोपति मुर्मू  
से मिले, क्या कुछ बड़ा होने वाला है

जयपुर टाइम्स



महोदय से बातचीत जरूर हुई होगी क्योंकि टैरिफ को लेकर भारत के व्यापार जगत से जुड़े लोगों में कई तरह के सवाल आकर खड़े हो गए हैं और विदेश में भारत का माल खरीदने वाले व्यापारियों के लिए भी एक नई मुश्किल आकर खड़ी हो गई है इन हालातों में अमेरिका के साथ भारत के किस तरह के संबंध रखे जाएं इसके बारे में भी मोदी और राष्ट्रपति महोदय के बीच बातचीत होने के आसार हैं।

हालांकि कुछ लोग यह भी कह रहे हैं कि 9 सितंबर को चुनाव आयोग की ओर से उपराष्ट्रपति पद का जो चुनाव करवाया जा रहा है इस चुनाव के संबंध में भी दोनों के बीच बातचीत हो सकती है लेकिन जानकारी लोगों का कहना है कि यह बहुत कम संभावना है कि उपराष्ट्रपति के चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति महोदय के बीच बातचीत हुई हो क्योंकि उपराष्ट्रपति चयन के मामले का राष्ट्रपति से कोई सीधा संबंध नहीं है इसलिए इस विषय पर ऐसा बहीं लगता है कि दोनों के बीच बातचीत हुई हो लेकिन टैरिफ को लेकर मोदी और राष्ट्रपति महोदय के बीच जरूर

अमेरिकी टैरिफ के बीच भारत ने दोगुना किया अमेरिकी तेल आयात, टम्प ने दी रूस से व्यापार पर पेनलटी की धमकी

जयपुर टाइम्स



कहना है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच भारत का रुख वैशिक स्थिरता के अनुकूल नहीं है। हालांकि, रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार भारत की तेल कंपनियों ने रूस से कच्चे तेल की खरीद लगभग रोक दी है। इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम जैसी कंपनियों ने कीमतों में बढ़तीरी और स्पाइपिंग की परीणतियों के जलवे स्ट्रा एवं नर्स टीन तर्जी की है। द्रम्प ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अगर भारत रूस से तेल खरीदना बंद करता है, तो यह अच्छा संकेत होगा। हालांकि उन्होंने यह भी जोड़ा कि उन्हें इसकी पुष्टि नहीं है। भारत सरकार ने इस विषय पर आधिकारिक स्थिति स्पष्ट नहर्स की है, लेकिन विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार सामने प्रेस कॉनफ्रेंस पर स्थिति पर नजर बनाए रखने की तरफ लगाई।

द्रम्प ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अगर भारत रूस से तेल खरीदना बंद करता है, तो यह अच्छा संकेत होगा। हालांकि उन्होंने यह भूमिका जोड़ा कि उन्हें इसकी पुष्टि नहीं है। भारत सरकार ने इस विषय पर आधिकारिक स्थिति स्पष्ट नहीं की है, लेकिन विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार शाम प्रेस कॉनफ्रेंस कर रिश्ता पर नजर बनाए रखने की घोषणा की।

# दिल्ली में भजनलाल की अमित शाह और बीएल संतोष से मुलाकात

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा केंद्र सरकार के मंत्रियों से प्रदेश के सर्वांगीण सर्वांगीण विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा आर्थिक सहायता लेने की कर रहे हैं कोशिश. अमित शाह से मलाकात के बाद प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियां होने के आसार

जयपुर टाइम्स



दौरान कृषि मंत्री, वित्त मंत्री, गैस एवं पेट्रोलियम मंत्री, ऊर्जा मंत्री, जल संसाधन मंत्री और कई अन्य मंत्रियों से मुलाकात कर चुके हैं और इन सभी मंत्रियों से विभाग बार जानकारी देकर उन्हें यह बताने का प्रयास किया है कि राजस्थान सरकार केंद्र सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं का ईमानदारी और पारदर्शिता से क्रियान्वयन कर रही है, भजनलाल सरकार ने वकायदा तथ्यात्मक तरीके से परियोजनाओं की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुतकरके केंद्रीय मंत्रियों से परियोजनाओं के बेहतर तरीके से क्रियान्वयन के लिए वित्त संबंधी जरूर का विषय भी जोरदार तरीके से उठाया है। बड़ी बात यह है कि भजन लाल शर्मा ने अब तक जिन-जिन मंत्रियों से मुलाकात की है उन सब मंत्रियों ने केंद्रीय मंत्री करने का भरोसा मुख्यमंत्री को दिलाया है इन मंत्रियों से मुलाकात करने से पहले पिछले दिनों भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी मुलाकात की थी और मोदी ने भी मुलाकात के दौरान भजनलाल सरकार के कार्यों की प्रशंसा की भजनलाल शर्मा ने भी प्रदेश सरकार की ओर से पिछले 19 माह में जो जो नवाचार किए गए जो जो निर्णय लिए गए और जो जो काम किए गए और आगे सरकार क्या-क्या काम करने जा रही है इन सब के बारे में तथ्यात्मक तरीके से पीएम मोदी को बताया था इसके बाद मोदी ने भजनलाल शर्मा की पीठ भी तब तक पाइ और उन्हें कहा भी की जिस तरह से आप काम कर रहे हैं वैसे करते रहो, पीएम मोदी से मुलाकात के बाद भजन लाल शर्मा के चेहरे पर नई रौनक छा गई थी क्योंकि मोदी ने उन्हें

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दुग्ने जोश और उत्साह के साथ केंद्र सरकार के बड़े-बड़े विभाग संभाल रहे मंत्रियों से एक-एक करके मुलाकात की और राजस्थान के सर्वांगीण विकास के लिए उनसे मदद भी मांगी। कुल मिलाकर भजन लाल शर्मा का दिल्ली दौरा प्रदेश की जनता के लिए काफी फायदेमंद साबित होने वाला है और अभी हाल ही में भजनलाल शर्मा ने दिल्ली में गृह्यमंत्री अमित शाह से मुलाकात की करीब 1 घंटे तक दोनों नेताओं के बीच मुलाकात हुई इस मुलाकात में भजनलाल शर्मा ने प्रदेश सरकार के कामकाज के बारे में विस्तार से जानकारी दी और केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट भी शाह के सम्मुख प्रस्तुत की और





# शिक्षक, शिक्षा और समाज



पर समाज का उसके प्रति  
जो नजरिया है उसमें रात-  
दिन का बदलाव आ गया  
है। मान-सम्मान तथा सेवा-  
भाव का जो दृष्टिकोण  
पहले शिक्षकों के प्रति  
हमारा रहा है, वह सर्वथा  
नए आयामों में बदल गया  
है। भौतिक सुख-सुविधाएं  
समाज के दूसरे क्षेत्रों के  
लोग तो ले लें, पर शिक्षक  
अपनी वही फटीचरी जिंदगी  
जीता रहे, यह दोयम दर्जे  
की मानसिकता हमारे लिए  
घातक रही। जहां तक छात्रों  
के रवैये का सवाल है, वह  
बिल्कुल बदल गया है।  
स्कूल शिक्षक हो या कॉलेज  
शिक्षक, हर जगह शिक्षक  
को ही नीचा देखना पड़ रहा  
है। छात्रों में बढ़ती  
अनुशासनहीनता,  
उच्चस्थिति और आए दिन  
होने वाली हड्डतालें, उनके  
प्रति बढ़ते असंतोष का  
प्रतीक हैं। श्रद्धाभाव तो  
तनिक नहीं रहा, बिना गुरु  
के ज्ञान नहीं मिल सकता,  
यह बात असत्य मानी जाने  
लगी है।

जहां तक शिक्षकों में  
दयूशन पढ़ाने के बढ़ते  
चलन का प्रश्न है, वह  
प्रासंगिक बन गया है।  
अल्प वेतन में जिस दायित्व  
की पूर्ति हम सोचते हैं,

वार्थ साधने के चक्रकर में कई बार देश, समाज और कानून की परवाह नहीं की जाती। सबसे बड़े रोल मॉडल वे लोग माने जाने लगे हैं जिन्होंने खुब पैसा बनाया है। जिन्होंने किन्हीं मूल्यों के लिए संघर्ष किया है, पर आर्थिक सफलता हासिल की है, उन्हें पूछा नहीं जाता। ऐसे में देश और समाज के लिए मरने-खपने की प्रेरणा कहां से मिलेगी! शिक्षक का दर्जा समाज में बड़ा ही समाजनीय तथा उच्च माना गया है। वह नैतिकता व आदर्शों का प्रेरणास्रोत तथा जीवन-मूल्यों के सतत नियामक रूप में भी जाना गया है। शिक्षक के रूप में एक विनयशील, अनुशासनबद्ध और आदर्श जीवन पर चलने वाले व्यक्ति को मान्य किया गया है तथा माना गया है कि उस पर समाज, राष्ट्र तथा मानव जीवन की सभी नैतिक जिम्मेदारियां हैं। समय के साथ 'गुरु' के आदर्श रूप की व्यवस्था बिट्ठने लगी है तथा जीवन के दूसरे क्षेत्रों में कार्यरत लोगों की तरह ही शिक्षक भी बनता चला गया। बनता क्यों नहीं, वह भी हाड़-मांस का पुतला है, उसकी भी जिम्मेदारियां तथा महत्वाकांक्षाएं हैं। गिरते जीवन-मूल्यों की इस आंधी ने शिक्षक के आदर्श स्वरूप को झँझोड़ कर रख दिया और आज तो हालत यह है कि शिक्षक जगत में भी भ्रष्टा ने अपना घर बना दिया है।

शिक्षक बनते ही व्यक्ति पर नैतिकता का एक मूलम्मा अपने आप चढ़ जाता है। उसके द्वारा किया जाने वाला हर कार्य आदर्शों की कस्टौटी पर तोला जाता है और वह हमेशा एक मानसिक दबाव का जीवन जीता है। ईमानदारी और सच्चाई की प्रतिमूर्ति बनकर भी उसे जीना पड़ता है; पर समाज का उसके प्रति जो नजरिया है उसमें रात-दिन का बदलाव आ गया है। मानसम्मान तथा सेवा-भाव का जो दृष्टिकोण पहले शिक्षकों के प्रति हमारा रहा है, वह सर्वथा नए आयामों में बदल गया है। भौतिक सुख-सुविधाएं समाज के दूसरे क्षेत्रों के लोग तो ले लें, पर शिक्षक अपनी वही फटीचरी जिंदगी जीता रहे, यह दोयम दर्जे की मानसिकता हमारे लिए धातक रही। जहां तक छात्रों के रवैये का सवाल है, वह बिल्कुल बदल गया है। स्कूल शिक्षक हो या कॉलेज शिक्षक, हर जगह शिक्षक को ही नीचा देखना पड़ रहा है। छात्रों में बढ़ती अनुशासनीयता, उच्छृंखलता और आए दिन होने वाली हड्डतालें, उनके प्रति बढ़ते असंतोष का प्रतीक हैं। श्रद्धाभाव तो तिकिन कर्तव्य में रहा, बिना गुरु के ज्ञान नहीं मिल सकता, यह बात असत्य मानी जाने लगी है।

जहां तक शिक्षकों में दृश्यशन पढ़ाने के बढ़ते चलन का प्रश्न है, वह प्रासांगिक बन गया है। अल्प वेतन में जिस दायित्व की पूर्ति हम सोचते हैं, वह कर्तव्य संभव नहीं है। उसकी भी जरूरतें हैं, दायित्व हैं, बच्चे हैं, उनका लालन-पालन, ब्याह-सादी, जो भी मनुष्य रूप में उसे मिले हैं, उन्हें उसे निभाना ही है। जटिल होते जीवन संघर्ष में यदि वह इस रूपमात्रा सहारे का आसार नहीं ले गा तो वह कई मोर्चों पर हार जाएगा। दूसरे क्षेत्रों में जहां भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, कमीशनखोरी तथा लूट-खरों समी हैं, वहां शिक्षकों को इस तरह के अवसर बहुत कम हैं। गांव की प्राथमिक शाला में बिना किसी स्कूल बजट के पढ़ा रहे शिक्षक से किस घोटाले की आशंका की जा सकती है? अधिक से अधिक शिक्षक पर यह आरोप आ जाता है कि उसने रुपए लेकर छात्र के अंक बढ़ा दिए या उसे उत्तीर्ण कर दिया, पर यह इन्होंने न्यून है कि वह यहां भी अपने नैतिक व आदर्श स्वरूप को बचाए हुए है। इस दृष्टि से वह जो श्रम करके पैसा कमाता है, उसे किसी भी तरह गलत नहीं कहा जा सकता। समाज में अच्छी बातें कहने व उपदेश देने वाले तो बहुत हैं, पर उन पर अमल करने वाले गिने-

## आजादी की सीमा



पिछले कई वर्षों से अभिव्यक्ति की आजादी और लोकतंत्र के नाम पर चल रहे नाटक को देख कर बुद्धिजीवी वर्ग हतप्रभ-सा है। क्या अब समय नहीं आ गया कि अभिव्यक्ति की आजादी और लोकतात्रिक अधिकारों की भी एक सीमा तय हो, क्योंकि अगर ऐसा नहीं किया गया तो इस तरह के नाटक लगातार होते रहेंगे और सामान्य नागरिक इसमें पिसता रहेगा। कभी हाईवे जाम से, कभी आगजनी से, कभी पथरबाजी से, कभी आराध्य देवों के अपमान से। भारत में बेरोजगारी एक ऐसा विषय है जो सालों से हर राजनीतिक दल के चुनावी मुद्दों की सूची में शामिल रहता है। मगर चुनाव जीतते ही इसे हवा में उड़ा दिया जाता है। पर सही मायनों में देखा जाए, तो बेरोजगारी के कसूरवार सिर्फ राजनीतिक दल नहीं हो सकते। आज के

युवाओं में हृनर और प्रतिभा पर विश्वास की कमी दिखाई देती है। रोजगार के क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा से उन्हें अपने चुने गए विषय और मेहनत पर संशय होने लगता है। कम पढ़े-लिखे युवा कहीं भी रोजगार की तलाश कर काम करने लगते हैं। बेरोजगार तो वह व्यक्ति रह जाता है, जिसके पास डिग्रियां तो हैं, पर अपने कौशल पर विश्वास नहीं। सरकार ने कौशल विकास के लिए योजनाएं बनाई, पर इनका परिणाम कोई खास बदलाव नहीं ला पा रहा है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में कुछ ऐसे विशेष बदलाव लाने होंगे, जिससे छात्रों को अपने कौशल और ज्ञान पर आत्मविश्वास बढ़े। चुनाव आयोग ने एक से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने पर रोक लगाने की सिफारिश की है। उसका यह प्रस्ताव स्वागतयोग्य है। आजकल

चुनावों पर सीमा से कई गुना पैसा खर्च किया जाता है। कोई भी नेता अगर दो जगह से चुनाव जीत जाता है, तो उसे एक सीट से इस्तीफा देना पड़ता है। जिस सीट से इस्तीफा दिया जाता है, वहां के मतदाता ठगा महसूस करते हैं। उस खाली हुई सीट पर चुनाव आयोग को एक बार फिर से वहीं सारी प्रक्रिया शुरू करनी पड़ती है। एक बार फिर से लाखों रुपए खर्च किए जाते हैं, सुरक्षा व्यवस्था फिर से करनी पड़ती है। अब इस समस्या को हल करने के लिए केंद्र सरकार को गंभीरता दिखानी चाहिए। एक से अधिक सीट पर चुनाव लड़ने पर रोक लग। एक तरीका और भी हो सकता है कि जिस सीट को छोड़ा जाता है वहां दूसरे नंबर पर आने वाले उम्मीदवार को विजयी घोषित किया जा सकता है।

सम्पादकीय

## वनों की कटाई की वजह से खतरे में बाघ



देश भर के जंगलों में जिस तरह से अतिक्रमण और खनन के साथ मानवीय हस्तक्षेप बढ़ा है, उससे बाघों का सुरक्षित पर्यावास खतरे में है। वनों की लगातार कटाई ने उनके लिए आहर की चुनौतियां भी बढ़ा दी हैं। जंगलों के भीतर सड़कों के निर्माण और कोलाहल बढ़ने से प्राकृतिक माहौल का संतुलन बिगड़ा है। नतीजा यह कि अब बाघ जंगलों से बाहर निकल रहे हैं। भोजन-पानी की तलाश में भटकते ये वन्य जीव मनुष्यों के लिए तो खतरा बने ही हैं, साथ ही उनके जीवन पर भी संकट बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में मनुष्यों और वन्य जीवों के बीच संघर्ष की घटनाओं में इजाफा हुआ है। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण की ओर से जारी रपट भी इस ओर इशारा करती है, जिसमें कहा गया है कि वर्ष 2021 से 2025 के दौरान देश भर में 667 बाघों की मौत हुई है। इनमें से 341 बाघों की मौत अभ्यारण्यों से बाहर हुई है। इस रपट ने अभ्यारण्यों की देखरेख में बरती जा रही लापरवाही को भी उजागर किया है। वाल है कि अभ्यारण्यों में आवाजाही के लिए बने गलियारों से बाघ और तेंदुए गांवों एवं शहरों तक कैसे पहुंच जाते हैं? क्या उनके लिए जंगल छोटे पड़ रहे हैं। क्या बाघों की निगरानी के लिए अब तक मजबूत तंत्र नहीं बन पाया है? अगर कहीं बाड़बंदी नहीं है और बाघ निर्धारित दायरे से बाहर निकलते हैं, तो समय रहते ऐसी घटनाओं का पता क्यों नहीं लगाया जाता। ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीक के बावजूद बाघों की नियमित निगरानी क्यों संभव नहीं हो पा रही है। एक सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या जंगलों में बाघों के लिए भोजन का अभाव है? मध्य प्रदेश में दो दशकों में जिस तरह वनों की कटाई हुई है, उसका परिणाम सामने है। यहां चार वर्ष के भीतर अभ्यारण्यों से बाहर निकले नब्बे बाघों की मौत कोई साधारण घटना नहीं है। शासन व प्रशासन को बाघों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ उनकी सुरक्षा पर भी ध्यान देना होगा। यह सब आधी-अधीरी योजनाओं से नहीं, बल्कि नवोन्मेषी उपायों से ही संभव हो पाएगा।

पूर्वग्रह के पांच

पर ऐसा क्यों है? अमूमन यह कहा जाता है कि मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो विवेकशील और तर्कनिष्ठ है। हजारों सालों से अनवरत चली आ रही विज्ञान और दर्शनशास्त्र में प्रगति इस बात का पक्का सबूत है कि मनुष्य जाति अपने विवेक के कारण अन्य प्राणियों से अलग है। वह अपना मत बदलती है और विवेक के आधार पर नई परिकल्पनाओं को ठोस आकार देती है। संज्ञानात्मक विज्ञान (कॉण्ट्रिव साइंस) के विशेषज्ञ ह्यूगे मर्सिएर और डेन स्पर्कर ने अपनी किताब 'द एनिझमा ऑफ रीजन' में बताया है कि मानव चेतनता, जिसे औवित्य या अंग्रेजी में रीजन कहा जाता है

**ल** गभग पैतालीस साल पहले, 1975 में, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी ने एक अध्ययन किया था, जो आज की परिस्थितियों को समझने के लिए बहद उपयोगी है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि अगर हम कोई धारणा, विचार या मत बना लेते हैं, तो बाद में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर उसको बदलने के लिए तैयार होते हैं या नहीं। यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों ने अपने शोध में पाया कि एक बार जो धारणा हम बना लेते हैं, उसे तब भी नहीं बदलते, जब नई जानकारी यह साबित कर देती है कि हमारा मत एकदम गलत था। उनका कहना था कि हम अपनी धारणा से चिपके रहते हैं, चाहे हमारे सामने कोई भी तर्कपूर्ण दलील कितने भी प्रभावी तरीके से क्यों न रखी जाए। इस अध्ययन से एक और चौकाने वाली बात निकल कर आई थी कि आमतौर पर हममें तर्क और प्रमाण के आधार पर सोचने की कुव्वत न के बराबर है। कुछ समय पहले अमेरिका की प्रतिष्ठित पत्रिका 'न्यू यॉर्कर' ने इस संबंध में एक लेख छापा था, जिसमें कई और अध्ययनों के आधार पर कहा गया था कि विवेकशील प्रतीत होने वाले व्यक्ति भी ज्यादातर नासमझ और तरक्शून्य होते हैं और वे सामान्य लोगों की तरह ही अपने बने-बनाए मत को बदलने से बचते हैं। मसलन, अगर किसी कारण से हम मानने लगे कि सूरज पूरब से नहीं, बल्कि पश्चिम से निकलता है, तो सारी दलीलों और तथ्यों को सुनने के बाद भी हम अपना मत नहीं बदलते। पर ऐसा क्यों है? अमृमन यह कहा जाता है कि मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो विवेकशील और तर्कीनिष्ठ है। हजारों सालों से अनवरत चली आ रही विज्ञान और दर्शनशास्त्र में प्रगति इस बात का पवक्ता सबूत है कि मनुष्य जाति अपने विवेक के कारण अन्य प्राणियों से अलग है। वह अपना मत बदलती है और विवेक के आधार पर नई परिकल्पनाओं को ठोस आकार देती है। संज्ञानात्मक विज्ञान (कॉण्ट्रिट वाइंड्स) के विशेषज्ञ हूँगों मर्सिंह और डेन स्पर्कर ने अपनी किताब 'द एनिमा



ऑफ रीजन' में बताया है कि मानव चेतना, जिसे औवित्य या अंग्रेजी में रीजन कहा जाता है, क्रमागत उन्नति का लक्षण है। दूसरे शब्दों में चेतना एक 'इवॉल्व्ड ट्रेड' है, जिसकी क्रमागत उन्नति ठीक उसी तरह से हुई है जैसे कि हमारा चार के बजाय दो पैरों पर चलना हुआ है। उनका कहना है कि मनुष्य जाति की विशेषता उसकी एक-दूसरे के साथ मिल कर काम करने की प्रवृत्ति है। पर सहयोग स्थापित करना और फिर उसको चलाए रखना एक टेढ़ी खीर है। तर्क, विवेक या रीजन की उत्पत्ति और विकास गूढ़ प्रश्नों का अर्थ समझने के लिए नहीं, बल्कि समूह में सहयोग बनाए रखने के लिए और उससे उपर्युक्त समस्याओं से निपटने के लिए हुआ था। शोधकर्ताओं के अनुसार, चूंकि मनुष्य अति सामाजिक प्राणी है, इसलिए जो विचार बुद्धिवादी दृष्टि से बचकाने लगते हैं, वे वास्तव में सामाजिक विमर्श और किया के नजरिए से चुरु होते हैं और उपयोगी भी। इस संदर्भ में पुष्टि पूर्वाग्रह (कन्फर्मेशन वायस) को ही ले लीजिए। यह जननानस की वह प्रवृत्ति है, जो उस सूचना, तथ्य आदि को तो तुरंत ग्रಹण कर लती है, जो हमारे पूर्वाग्रह से मेल खाते हैं, पर उन सब तथ्यों को नकार देती है, जो पूर्वाग्रह से मेल नहीं खाते हैं। कन्फर्मेशन वायस को साक्षित करने के लिए स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में कई शोध हुए हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि हम तथ्यों की पूरी जानकारी के बावजूद उनके निष्कर्षों से अपनी आखें मोड़ लेते हैं, जो हमारे पूर्वाग्रहों के विपरीत है। वास्तव में हम अपने पूर्वाग्रहों, चाहे वे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक हों, के प्रति इस कदर समर्पित हैं कि उनको लगातार और मजबूत करने के लिए सहायक तथ्यों की तलाश में रहते हैं और विपरीत परिदृश्य को अनदेखा करते रहते हैं। इसी वजह से, शोधकर्ताओं का कहना है, हम अमूमन दूसरों के तर्क और विचारों में तो फैरून त्रुटि पकड़ लेते हैं, पर अपनी कमी नहीं पकड़ पाते हैं। यह प्रवृत्ति ठीक उस चूहे जैसी है, जो अपने पूर्वाग्रह की वजह से आश्वस्त है कि आसपास बिल्ली नहीं है और उसकी अपने तरीके से पुष्टि करने के चक्कर में बिल्ली के झपट्टे में आ जाता है। वह वास्तविक तथ्य कि बिल्ली पास ही मैं है, को बिल्कुल तबज्जो नहीं देता है। अध्ययनकर्ताओं का मानना है कि हम एकल व्यक्ति की तरह नहीं सोचते हैं। हमारी सोच सहकारिता पर आधारित है। एक व्यक्ति का विशेष ज्ञान, सामान्य क्रिया के रूप में औरों को उपलब्ध होता है।



## शहनाज गिल की आगामी फिल्म 'एक कुड़ी' में गाना गाएंगे हनी सिंह

सिंगर-एक्ट्रेस शहनाज गिल अपनी आगामी फिल्म एक कुड़ी से काफी चचा में है। यह फिल्म कुछ महीनों के अंदर दर्शकों के बीच होगी। हाल ही में अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें साझा की हैं, जो सोशल मीडिया पर तभी से वायरल हो रही हैं। इनमें एक्ट्रेस मशहूर रैपर हनी सिंह के साथ नजर आ रही हैं। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि अभिनेत्री की ओरांगी फिल्म के लिए हनी सिंह एक धमाकेदार गाना लेकर आने वाले हैं।

**हनी सिंह के साथ मस्तमौले अंदाज में दिखी शहनाज**

शहनाज गिल ने सोशल को अपने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों की बात की जाए तो पहली ही तस्वीर में एक्ट्रेस हनी सिंह के साथ दिख रही है, जिसमें दोनों काफी खुले दिख रहे हैं। इन तस्वीरों में रैपर अभिनेत्री की ओर देखते हुए हसने नजर आ रहे हैं। इनके अलावा शहनाज गिल ने खुद की कुछ और फोटोज शेयर की हैं, जिनमें उन्हें अनोखी हेयरस्टाइल में देखा जा सकता है। साथ ही एक्ट्रेस वेस्टन आउटफिट और ब्लैक कलर का लॉग बूट पहने दिख रही है।

**एक कुड़ी के लिए सॉन्ना लेकर आ रहे हनी सिंह?**

इन तस्वीरों को शेयर करते हुए शहनाज गिल ने हनी सिंह को टेंग करते हुए केषण दिया कि ये हरी देसी हैं। इस पोर्टर के बायरल होते ही कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि इनके हाल ही में रैपर अभिनेत्री के आगांगी की ओरांगी फिल्म के लिए हनी सिंह एक शानदार गाना लेकर आने वाले हैं। आपको बताते चलें कि इनसे पहले भी हनी सिंह इस फिल्म के लिए एक गाना गा चुके हैं।

**एक कुड़ी फिल्म के बारे में**

शहनाज गिल की यह पंजाबी फिल्म 19 सितंबर 2025 को रिलीज होगी। पहले इस फिल्म को 13 जून को रिलीज किया जाना था। फिल्म का निर्देशन अमरजीत सिंह द्वारा किया जा रहा है और उन्होंने ही इसकी कहानी भी लिखी है। इस फिल्म का इंतजार एक्ट्रेस के साथ-साथ उनके फैंस भी बड़ी बेसब्री से कर रहे हैं।



## सनी देओल और एक्सेल एंटरटेनमेंट ने पहली बार मिलाया हाथ

एक्ट्रेस सनी देओल ने हाल ही में गदर 2 और जट जरी टिक्किये दी। उनके पास बॉर्डर 2, लाहौर 1947 और रामायण-पाठ वन जीसी बड़ी फिल्में हैं। सूत्रों के मुताबिक, जल सनी देओल एक्सेल एंटरटेनमेंट की बड़े बजट की एक्ट्रेस के बारे में भी नजर आये। एक सूत्र ने बताया कि इस फिल्म से सनी देओल और एक्सेल एंटरटेनमेंट की पहली बार पार्टनरशिप होगी। दोनों के बीच इसको लेकर काफी वक्त लैटा गया है। यह एक बड़े बजट की फिल्म पर भिलकर काम शुरू हो रहा है। यह भी बताया गया कि इस फिल्म से बालाका डायरेक्शन में डेट्यू करेंगे। वह इससे पहले कई तमिल ब्लॉकबस्टर फिल्मों में असिस्टेंट और एक्सेसिप्ट डायरेक्टर रह चुके हैं। फिल्म की शूटिंग दिसेंबर से शुरू होगी। सूत्र ने बताया, यह एक दमदार फिल्म होगी। इसमें सनी उसी अवतार में दिखेंगे, जिसमें दर्शकों ने उन्हें हमेशा पसंद किया है।



## क्या बिंग बॉस 19 का हिस्सा होंगी मलिलका शेयर? एक्ट्रेस ने बताई सच्चाई

बॉलीवुड स्टार सलमान खान द्वारा होस्ट किया जाने वाला बिंग बॉस भारत के सबसे पर्फेक्ट रियलिटी शो में से एक है। यह शो अपने 19वें रीजन के साथ वापस आ गया है और इसमें भाग लेने के लिए किन हिस्तियों से संपर्क किया गया है, इस बारे में पहले से ही अटकले लगाई जा रही हैं। इस बीच ये भी खबरे आईं कि बॉलीवुड अभिनेत्री मलिलका शेरात भी बिंग 19 में नजर आएंगी। अब शो में हिस्सा लेने पर एक्ट्रेस ने चुप्पी तोड़ी है और सारी सच्चाई तात्परी है।

**मलिला ने चर्चाओं को किया खारिज**

अपने बिंग बॉस 19 में जाने की चर्चाओं की बीच अब मलिलका शेरात ने अपने इंस्टाग्राम पर एक स्टोरी शेयर की है। इस श्टोरी में मलिलका ने बिंग बॉस में उनको लेकर चल रही चर्चाओं पर प्रतिक्रिया दी है। एक्ट्रेस ने बिंग बॉस से जुड़ी चर्चाओं को खारिज करते हुए इंस्टाग्राम श्टोरी पर लिखा, सभी अक्षण्या पर विराम लगाते हुए मैं बिंग बॉस नहीं कर रही हूं और कभी नहीं करूँगी। इस बीच ये भी खबरे आईं कि बॉलीवुड अभिनेत्री मलिलका शेरात भी बिंग 19 में नजर आएंगी। अब शो में हिस्सा लेने पर एक्ट्रेस ने चुप्पी तोड़ी है और सारी सच्चाई तात्परी है।



उस बत्ते आनंद एल राय के पास मुझे कारन करने के लिए बजट नहीं था। मैंने लगभग फिल्म को मना कर दिया था। लेकिन आनंद सर का जुनून इतना गहरा था कि उन्होंने हाल में मुझे ही कुदन के रोल में देखना चाहा। धनुष ने आपको बताया... उन्होंने इसके लिए बुराया तरह करने के लिए हर मुश्किल का सामना किया, यहां तक कि अपनी जैव से भी पैसा लगाया। उन्होंने मुझमें कुदन को देखा और अपने विजन पर आड़िग रह। बता दें कि राङ्गाणा में धनुष ने बनारस के एक जुनूनी प्रेमी कुदन का किरदार निभाया था, जो दिल दूने के बाद राजनीति की दुनिया में चला जाता है। इस फिल्म के बाद धनुष और आनंद एल राय ने अतरंगी रे में साथ काम किया। और अब दोनों तरे इक्के में नाम की फिल्म पर फिर से साथ आ रहे हैं, जो इसी साल राजीव होगी। इसमें धनुष के साथ कृति सेनन भी दिखेंगी।

## कौन है मेधा राणा, अनीत पड़ा से हो रही है तुलना

मेधा राणा अचानक सुर्खियों में आ गई है। उनकी तुलना सैयरा गर्ल अनीत पड़ा से हो रही है।

मेधा की बॉर्डर 2 में एंट्री हुई है।

वह फिल्म में वरुण धनवन के साथ रोमांस करती दिखेंगी।

सैयरा की ब्लॉकबस्टर सफलता के बाद अनीत पड़ा की पॉपुलरिटी आसमान छू रही है। और अब जैव इस फिल्म का ऐलान हुआ था, तब इंस्टाग्राम पर अनीत को 34 हजार यूजर्स फॉलो कर रहे थे, लेकिन अब यह बढ़कर 2 भिलियन के करीब पहुंच गए हैं। अनीत देख की नई नेशनल क्रांति बन गई है। अब इसी बीच और एक हसीना की इस चकाचौथ में एंट्री हुई है। नाम हो मेधा राणा। उन्हें बॉर्डर 2 में वरुण धनवन के अपोंजिट कारस्ट किया गया है। मजेदार बात ये है कि

जैसे ही मेधा का नाम सामने आया, उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर तरने लगी हैं। तोग मेधा की तुलना अनीत पड़ा से कर रहे हैं। कह रहे हैं कि सैयरा गर्ल की तरह ही मेधा राणा भी बॉलीवुड की बैंजोड़ फ्रेश फेस बनेगी। अब आप भी सोच रहे होंगे कि ये मेधा राणा हैं कौन? तो आइए, तपसील से बताते हैं।

बॉर्डर 2 में वरुण धनवन की प्रेमिका बनेगी मेधा राणा।

सबसे पहले, सबसे जरुरी बात। साल 1997 की ब्लॉकबस्टर फिल्म बॉर्डर 2 के सीकवल बॉर्डर 2 का हर किसी को बेसब्री से इंतजार है। इस बारे इसमें सनी

देओल के साथ वरुण धनवन, दिलीजी दोसाझा और अहन शेषी मुख्य भूमिका में हैं। 28 जुलाई को निर्माणों ने फिल्म में वरुण धनवन की प्रेमिका के रूप में एक नई घेहू की पेश किया।

मेधा राणा का स्वप्न धनवन की दुनिया की अनेक तरह हो रही है। वर्ष 2022 में आई वेब सीरीज लंदन फाइल्स में अपने मेधा को देखा होगा। इस सीरीज से ही मेधा राणा ने एकिंग में डेट्यू किया। सीरीज अर्जुन रामपाल और प्रबुल कोहली लिंग रोल में थी।

बाबिल की गर्लफ्रेंड का निया चुकी हैं रोल में वरुण धनवन की दुनिया की अनेक तरह हो रही है।

मेधा राणा वेब सीरीज के अलावा OOTW पर

नेटपिलवर्स की फिल्म फ्राइडे नाइट जॉन में भी नजर आ चुकी हैं। इसमें वह बाबिल खान की गर्लफ्रेंड बी थी। यही नहीं, वह अमेजन एमएस शेन द्वारा लिया गया इसकी फिल्म के बारे में सबाह के दिन देख रही है। अब इसी प्लॉटफॉर्म की सीरीज डासिंग ऑप द ग्रेव में सबाह के रोल में दिखी।

मेधा राणा की उम्र और एजुकेशन, वरुण धनवन से 12 साल छोटी

मेधा राणा की उम्र 24 साल बाली जा रही है। उनका जन्म 25 दिसंबर 1999 को गुरुग्राम में हुआ है।

हालांकि, उनकी पांचाली लिंग-लिंग और अंतर्मिलन के दृष्टिकोण से वह एक लिंग-लिंग है।

वैलगुरु में हुई है। मेधा राणा के बारे में मेधा राणा का जुनून इतना गहरा था कि उन्होंने बारी-बारी देखने के लिए बारी-बारी अंतर्मिलन करना आसान नहीं था। धनुष ने आपको बताया कि इस फिल्म में उन्हें कारस्ट करना आसान नहीं था। धनुष ने कहा,

मैं डॉलिंग से किया था एंटिंग डेव्यू

मैं डॉलिंग और एंटिंग में बारी-बारी अंतर्मिलन करने के लिए बारी-बारी अंतर्मिलन की ओर आइंग रहा।













